एम.ए. (विकास अध्ययन)
Master of Arts (Development Studies)
Programme Code: MADS-23

एम. ए. डी. एस. – 4 सेमेस्टर

(M.A.D.S.- 4th Semester)

परियोजना कार्य

(Project Work)

(COURSE CODE: MADS-12)

रुपरेखा एवं दिशानिर्देश

(Outline and Guidelines)

शिक्षार्थियों हेतु आवश्यक दिशानिर्देश
Essential Instructions for Learners

1. एम. ए. (विकास अध्ययन) के चतुर्थ सेमेस्टर में विकास अध्ययन के शिक्षार्थियों को परियोजना कार्य प्रस्ताव एवं परियोजना कार्य करने हेतु अपने अध्ययन केन्द्र के शैक्षिक परामर्शदाता से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा। अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने अध्ययन केन्द्र पर विकास अध्ययन/अर्थशास्त्र/समाज कार्य के शैक्षिक परामर्शदाता से सम्पर्क कर मार्गदर्शन प्राप्त करें।
2. विकास अध्ययन/अर्थशास्त्र/समाज कार्य के परामर्शदाता से सहयोग प्राप्त कर तैयार करेगें। यदि आवश्यकता हो तो विश्वविद्यालय के विकास अध्ययन विभाग के प्राध्यापकों से भी संपर्क कर सकते है।
3. शिक्षार्थियों को परियोजना कार्य प्रस्ताव के साथ अपने पर्यवेक्षक का एक बायो-डेटा अनिवार्य रूप से संलग्न करना होगा, इसके बिना किसी भी शिक्षार्थी का शोध प्रारूप विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा।
4. विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों द्वारा परियोजना कार्य प्रस्तावों का अवलोकन किया जाएगा तथा आवश्यक दिशानिर्देश एवं सुझाव, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की वेब साईट पर अपलोड कर दिए जायेंगे।
5. जिन शिक्षार्थियों का परियोजना कार्य प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया जाएगा, उन शिक्षार्थियों को अपना परियोजना कार्य प्रस्ताव को आवश्यक सुधार के साथ एक सप्ताह के भीतर पुनः विश्वविद्यालय (soft copy) को प्रेषित करना होगा।
6. कोई भी परियोजना कार्य प्रस्ताव जो विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया हो उसका परियोजना कार्य, परियोजना कार्य प्रस्ताव की स्वीकृति के बिना किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
7. विश्वविद्यालय द्वारा परियोजना कार्य प्रस्ताव की स्वीकृत की पुष्टि हो जाने पर ही शिक्षार्थी अपना परियोजना कार्य प्रारंभ करें।
8. परियोजना कार्य प्रस्ताव पर आपके अध्ययन केंद्र के परामर्शदाता एवं पर्यवेक्षक की संस्तुति होने पर ही अपना परियोजना कार्य प्रस्ताव विश्वविद्यालय को प्रेषित करें।
9. पर्यवेक्षक की संतुति न होने पर आपका परियोजना कार्य विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा।
10. विश्वविद्यालय को भेजा गया परियोजना कार्य शिक्षार्थियों को वापस नहीं किया जाएगा।
11. शिक्षार्थियों से आशा की जाती है कि वे अपने शोध अध्ययन स्वयं करें। किसी भी तरह की नकल की स्थिति में आपका परियोजना कार्य स्वीकार नहीं किया जायेगा।
12. यदि विश्वविद्यालय द्वारा किन्हीं दो शिक्षार्थियों के परियोजना कार्य का विषय एवं क्षेत्र समान पाया गया अथवा अनुवाद करके दूसरे शिक्षार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया तो उनका परियोजना कार्य निरस्त कर दिया जाएगा।
13. परियोजना कार्य में मार्गदर्शन हेतु आपके अध्ययन केन्द्र द्वारा कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।
14. शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने परियोजना कार्य एवं परियोजना कार्य प्रस्ताव की दो प्रतियाँ तैयार करें जिसमें से एक विश्वविद्यालय हेतु एवं दूसरी शिक्षार्थियों के स्वंय के प्रयोग के लिए होगी।
15. आपका परियोजना कार्य (Project Work) डबल स्पेस, (12 font size) पेपर में होना चाहिए। परियोजना कार्य टाईप (typewrite) होने के पश्चात आपके द्वारा टाईपिंग अशुद्धियों की दोबारा जांच करनी चाहिए और उन्हें ठीक कराना चाहिए। परियोजना कार्य में पेज नंबर अवश्य डालें।
16. परियोजना कार्य की बाईडिंग हार्ड कवर पेज के साथ होनी चाहिए।
17. परियोजना कार्य के प्रथम पृष्ठों पर शिक्षार्थी का नाम नामंकन संख्या, पूरा पता आदि उल्लिखित होना चाहिए एवं पर्यवेक्षक का पूरा नाम भी लिखा होना चाहिए। जिसका प्ररूप संलग्न है।
18. जो शिक्षार्थी उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के विकास अध्ययन विभाग के सहायक प्राध्यापकों के निर्देशन में अपना शोध कार्य पूर्ण करना चाहते है। वे शिक्षार्थी उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के सहायक/सह प्राध्यापकों से किसी भी कार्यकार्य दिवस में सम्पर्क कर सकते है परन्तु यहाँ यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि वही शिक्षार्थी विश्वविद्यालय में सम्पर्क करें जो तीन माहों तक कम से कम प्रत्येक सप्ताह में तीन कार्यदिवसों में विश्वविद्यालय में उपस्थित हो सकें।
19. परियोजना कार्य के साथ शिक्षार्थियों को इस पुस्तिका के अन्तिम भाग में संलग्न तीन Performa को भरकर परियोजना कार्य के साथ ही संलग्न करना परम आवश्यक है।

14/6/24

14/June/24

आवश्यक तिथियाँ

विश्वविद्यालय को परियोजना कार्य का प्रस्ताव प्रेषित करने की अंतिम तिथि

Last date for submitting project work proposal to the University

विश्वविद्यालय को परियोजना कार्य प्रेषित करने की अंतिम तिथि

Last date for submission of project work to the University

परियोजना कार्य प्रस्ताव विश्वविद्यालय को प्रेषित करने की अंतिम तिथि: .... है। अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना शोध प्रबंध प्रस्ताव उक्त मेल आईडी .... पर प्रेषित करें।

- ❖ परियोजना कार्य (Project Work) विश्वविद्यालय को प्रेषित करने की अंतिम तिथि : ....
- ❖ उक्त तिथि के पश्चात प्रेषित किए गए परियोजना कार्य किसी भी दशा में विश्वविदयालय द्वारा स्वीकार नहीं किये जायेंगे।
- ❖ उक्त तिथि के पश्चात भेजे गए परियोजना कार्य अगले सत्र में बैक पेपर परीक्षा के माध्यम से स्वीकार किये जायेंगे।

प्रस्तावना
(Introduction)

विकास अध्ययन के शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि उन्होनें विकास अध्ययन पाठ्यक्रम के अन्तर्गत जो ज्ञान प्राप्त किया है उसका उपयोग करके क्षेत्र कार्य की विषयवस्तु से भी अवगत हो सके। अतः क्षेत्र कार्य की वास्तविकताओं से अवगत होते हुये समाज में अपनी भूमिका का निष्पादन करें तथा उस क्रिया में विकास अध्ययन की पद्धतियों का भी उपयोग करें ताकि वे भविष्य में अपनी कुशलताओं एवं निपुणताओं का उचित उपयोग करके अपना स्वंय का तथा समाज की समस्याओं के निराकरण में सहयोग प्रदान कर सकें। अतः विकास अध्ययन शिक्षार्थियों में शोध दक्षता उत्पन्न करने हेतु उन्हें शोध कार्य करना एक आवश्यक क्रियाकलाप है। जिसमें एक शीर्षक का चुनाव कर अपना परियोजना कार्य प्रस्तुत करना होता है। परियोजना कार्य प्रस्तुत करने के लिए सर्वप्रथम एक परियोजना कार्य प्रस्ताव (Project Work Proposal) का निर्माण करना होता है। आपका शोध प्रबंध प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार कर लिये जाने के पश्चाकत परियोजना कार्य को पूर्ण करना होगा। परियोजना कार्य प्रस्ताव एंव परियोजना कार्य सम्पन्न करने हेतु आपको उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी। परियोजना कार्य प्रस्ताव एंव परियोजना कार्य करने हेतु अपने अध्ययन केन्द्र (Study centre) पर शैक्षिक परामर्शदाता (Academic Counselor) से सम्पर्क करें तथा उनसे परियोजना कार्य करने हेतु पर्यवेक्षक के चयन में सहयोग मांगें। अध्ययन केन्द्र (Study centre) के शैक्षिक परामर्शदाता (Academic Counselor) आपको आस-पास के विश्वविद्यालय अथवा महाविद्यालय के विकास अध्ययन, अर्थशास्त्र,समाज कार्य विषय के प्राध्यापक/श्रम कल्याण अधिकारी/मानव संसाधन प्रबंधक/विश्वविद्यालय के विकास अध्ययन विभाग के प्राध्यापक से सम्पर्क करा देगें जो आपको परियोजना कार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करेगें। यही सहयोगी जो आपको परियोजना कार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करेगें आपके पर्यवेक्षक कहलायेगें। आपके पर्यवेक्षक ही आपको परियोजना कार्य पूर्ण करने में सहायता प्रदान करेंगे। अतः अपने पर्यवेक्षक के सम्पर्क में रहें तथा उनके द्वारा दिये गये सुझावों से लाभान्वित हो।

प्रयोजन
(Purpose)

परियोजना कार्य को विकास अध्ययन के पाठ्क्रम में सम्मिलित किए जाने का सार यहाँ पर यह है कि शिक्षार्थियों को समाज की वास्तविकताओं एवं मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया जा सके। जिससे आप समाज के विभिन्न आयामों से परिचित हो सकेगें। यहाँ पर आपकी सुविधा हेतु यह कहना प्रासंगिक होगा कि आप जिस विषय में भविष्य में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते है, उस विषय का चयन कर सकते हैं। विकास अध्ययन पाठयक्रम में आप विकास अध्ययन के विभिन्न विषयों एवं

क्षेत्रों से परिचित अवश्य हो गये होगें,जो विकास अध्ययन की पृष्ठभूमि से सम्बन्धित है। आज के परिप्रेक्ष्य में आप समाज के विभिन्न ज्वलन्त मुद्दों पर भी शोध कर सकते हैं।

उद्देश्य
(Objectives)

परियोजना कार्य के मुख्य उद्देश्य (Main Objectives of Project Work)

- समाज एवं समुदाय की परिस्थितियों से परिचित होना।
- सामाजिक जीवन से सम्बन्धित एवं जन समस्याओं से सम्बन्धित विषय चयन में मदद करना।
- परियोजना कार्य निर्माण हेतु व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना।
- अनुभवजन्य (Empirical) अध्ययन के संचालन में सहायता प्रदान करना।
- शिक्षार्थियों को अच्छी गुणवत्ता वाली परियोजना प्रतिवेदन (Report) लिखने में सक्षम बनाना।

परियोजना कार्य के विशेष उद्देश्य (Special Objectives of Project Work)

- शोध समस्या का निर्माण करना सीखना।
- गहन साहित्य सर्वेक्षण द्वारा शोध हेतु उपयुक्त विषय का चुनाव करना।
- उपकल्पना का निर्माण करने की प्रक्रिया से अवगत होना।
- शोध प्रारुप निर्माण की प्रक्रिया को जानना।
- निदर्शन प्रारुप निर्धारण को समझाना।
- आंकड़ों के संकलन की विधियों से अवगत होना।
- प्रोजेक्ट का सम्पादन करना सीखना।
- आँकड़ों का विश्लेषण करने का ज्ञान अर्जित करना।
- उपकल्पनाओं का परीक्षण सीखना।
- सामान्यीकरण और विवेचन
- प्रतिवेदन (Report) तैयार करना या परिणामों का प्रस्तुतीकरण यानी निष्कर्षों को औपचारिक रूप से लिखने की कला सीखना।

प्रबन्ध प्रस्ताव अथवा परियोजना कार्य से आशय
(Aims of Project Work/Dissertation)

परियोजना एक अप्रत्यक्ष /परोक्ष रूप में एंव सक्रिय कार्य करने की एक विधि है। जो संगठित रूप से एक विषय के बारे में क्रमबद्ध, विस्तृत एवं नयी जानकारी प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान करता है। आमतौर पर ऐसे विषय का चयन किया जाता है,जिस पर पूर्व में अधिक अध्ययन न किया गया हो अथवा ऐसी समस्या का चुनाव करें जिस पर पूर्व में अध्ययन तो हुआ हो परन्तु उस विषय में शोध का उद्देश्य भिन्न हो अथवा समस्या का स्वरूप परिवर्तित हो। उदाहरण स्वरूप ग्राम पंचायतों में निर्वाचित प्रतिनिधियों के सशक्तिकरण पर अनेकों अध्ययन हो चुके है परन्तु समय के परिवर्तन के साथ समस्या का स्वरूप भिन्न हो गया है। सामाजिक शोध ही यहाँ वह माध्यम होता है जिसके द्वारा समस्या एंव उसकी प्रकृति तथा समस्या समाधान के बारे में सहायता प्राप्त कर सकेगें।

परियोजना कार्य प्रस्ताव/परियोजना कार्य कब प्रारम्भ किया जाए?
When should the project work proposal/project work be started?

- अपनी रूचि के शोध विषय (Research Topic) का चयन करें।
- अध्ययन केन्द्र पर अपने शैक्षिक परामर्शदाता /पर्यवेक्षक से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा।
- पर्यवेक्षक से संस्तुति प्राप्त करें।
- अध्ययन करना। (Conducting the Study)

- प्रतिवेदन तैयार करना।
- अपने पर्यवेक्षक से समय-समय पर सलाह एवं मार्गदर्शन प्राप्त करें।

विषय /शीषक का चुनाव एवं पर्यवेक्षक की सहमति प्राप्त करना
(Selection of Topic and Supervisors consent)

किसी भी शोध को करने का प्रथम सोपान विषय का चयन होता है। अपनी रूचि के विषय को चुनते समय अपने पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को ध्यान में रखें। ताकि आप अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन कर सकें।इसके अतिरिक्त विषय की उपयुक्तता,प्रासंगिकता,विषय से संबधित अध्ययन सामग्री,समय सीमा एवं व्यय आदि बातों का ध्यान रखें।तथ्यों के संग्रहण हेतु स्थान का चयन भी विशेष महत्व रखता है जिससे आपकी समय एवं धन का अपव्यय न हो।आप अपनी सुविधानुसार राज्य,जिला एवं विकास खण्ड का चयन कर सकते है।परन्तु यहॉ यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि शोध अध्ययन समय की प्रासंगिकता एवं अनुकूलता का होना चाहिये जिससे आप वर्तमान की समस्या से अवगत हो सके।

शोध से सम्बन्धित विषय
(Topics related to Research)

किसी भी शोध कार्य को करने की प्रथम सीढी विषय चयन की होती है अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि अपनी रूचि का विषय चुनते समय अपने पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का भी ध्यान रखें ताकि आप अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन कर सकें। इसके अतिरिक्त आपको विषय की उपयुक्तता,प्रासंगिकता,विषय की अध्ययन सामग्री,समय सीमा के साथ-साथ शोध कार्य में व्यय होने वाली धनराशि पर भी ध्यान केन्द्रित कर सकें।

आप अपने विषय चयन में राज्य,जिला,ब्लाक एवं ग्राम स्तर की किसी भी इकाई को समस्या के रूप में ले सकते है परन्तु यहॉं यह कहना आवश्यक है कि शोध अध्ययन समय की अनुकूलता के अनुसार होना चाहिए एवं समय सीमा का ध्यान रखना आवश्यक है तथा प्राथमिक श्रोतों (Primary Data based)पर आधारित होना चाहिए |

शोध से सम्बंधित विषय क्षेत्र
(Research related subject areas)

अर्थशास्त्र
राजनीति
मानवशास्त्र
समाजशास्त्र
समाज कार्य
भूगोल
कानून
इतिहास
कृषि
इंजीनियरिंग
प्रबंधन
मनोविज्ञान
सामुदायिक विकास

मानव विकास परिप्रेक्ष्य
लोगों की भागीदारी,
लोगों का सशक्तिकरण
गैर-सरकारी संगठन
पंचायती राज,
पर्यावरण स्थिरता
स्वच्छता और सफ़ाई
स्वास्थ्य
लिंग
शिक्षा
संस्कृति और समाज
शासन और मानवाधिकार
संघर्ष और आपदा प्रबंधन

परियोजना कार्य प्रस्ताव की रूपरेखा
(Outline Research Project proposal)

आपका प्रबन्ध प्रस्ताव 8-10 पन्नों का होना चाहिये। यह प्रत्ययात्मक रूपरेखा (Conceptual framework) का होना चाहिये। जो समस्या की प्रकृति को दर्शाते हुये होना चाहिये।जिसमें समस्या का चयन उद्देश्य,उपकल्पना,समग्र एवं विनिदर्शन का विवरण होना चाहिए।आंकड़ा संग्रह की विधियॉं,सारणीयन एवं अध्यायीकरण को सम्मिलित किया जाना चाहिये। समाज वैज्ञानिक होने के नाते आप से अपेक्षा की जाती है कि आप सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियों का प्रयोग करते हुये नये ज्ञान की खोज एवं पुराने ज्ञान के सत्यापन का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

परियोजना कार्य प्रस्ताव लिखने हेतु प्रारूप
(Proposal format to write dissertations)

- ✓ शीर्षक का चुनाव (Selection of Topic) - सर्वप्रथम परियोजना कार्य प्रस्ताव बनाने हेतु एक शोध शीर्षक का चुनाव करना चाहिए जो समसामयिक समस्याओं से सम्बन्धित हो। जैसे शिक्षा एवं आर्थिक रूप से लाभ पूर्ण कार्यो द्वारा गली के बच्चों का सशक्तीकरण।
- ✓ उपलब्ध साहित्य का पुनः अवलोकन : जिस विषय का चयन आपके द्वारा किया जाता है उससे सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात उसका विवरण संक्षिप्त में (एक पैराग्राफ)प्रस्तुत करना होता है | इस प्रकार से कम से कम 15 – 20 साहित्य का अध्ययन किया जाना अपेक्षित है |
- ✓ समस्या का कथन: आपके द्वारा एक पैराग्राफ में जिस विषय का चयन आपके द्वारा किया गया है उसकी तार्किकता को प्रस्तुत करना होगा | जिसमें आपको यह वर्णन करना होगा कि आपके द्वारा जिस विषय का चयन किया गया है वह शोध कार्य हेतु किन मानदंडों के आधार पर आवश्यक है |
- ✓ कार्यात्मक परिभाषा: यदि संभव हो तो अपने विषय से सम्बंधित क्लिष्ट शब्दों की कार्यात्मक परिभाषा प्रस्तुत कीजिये |
- ✓ अध्ययन के उद्देश्य Objectives of the Study - अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से लिखा जाना चाहिए कि उक्त अध्ययन को किये जाने के पीछे आपका उद्देश्यि क्या है, तथा आप इस अध्ययन को किन-किन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु करना चाहते हैं।
- ✓ उपकल्पना का निर्माण Formation of Hypothesis - शोध परियोजना हेतु समस्या के आधार पर परिकल्पना / प्रकल्पना का निर्माण करना चाहिए। जैसे: गली के बच्चों में भी छुपी हुई प्रतिभाएं होती है यदि उनको उचित माहौल मिले तो समाज में अपना योगदान दे सकते हैं। अध्ययन की उपयुक्तता - अध्ययन का शीर्षक क्यो चुना गया तथा इसकी उपयोगिता क्या है के बारे में स्पष्ट ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहिए।
- ✓ अध्ययन हेतु प्रयोग प्रविधि Methodology for Study - प्रस्तुत शोध अध्ययन में कौन-कौन सी शोध प्रविधियों का प्रयोग करेगें । यहॉं पर आपको उन प्रयोग की जाने वाली विधियों का स्पष्ट एंव विस्तायर से वर्णन करना होगा ।
- ✓ शोध प्रचना Research Design – शोध प्रविधि में कौन सी शोध प्रचना का प्रयोग करेगें। जो आपके शोध कार्य की प्रकृति एंव उददेश्यों को फलीभूत करेगें उसके बारे में चर्चा करना चाहिए एवं परिभाषा देनी चाहिए।
- ✓ समग्र एंव निदर्शन Universe & Sampling – शोध कार्य का समग्र एंव निदर्शन क्या ़ होगा। उसके बारे में चर्चा करना चाहिए एवं परिभाषा देनी चाहिए।
- ✓ तथ्य एकत्रित करने की तकनीक Techniques of Data Collection - शोध अध्ययन में तथ्य एकत्रित करने हेतु दो विधियों का प्रयोग करते हैं।
- ✓ प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने की विधि Primary methods of data collection - प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने हेतु कई विधियों का प्रयोग करते हैं। जिनमें कुछ अग्रलिखित है -

1 अवलोकन
2 प्रश्नावली
3 अनुसूची
4 साक्षात्कार
5 वैयक्तिक अध्ययन

- ✓ द्वितीय तथ्य एकत्रित करने की विधि Methods of Secondary data collection द्वितीय तथ्य वे तथ्य होते है जो विभिन्न किताबों,पत्रिकाओं, समाचार पत्रों इत्यादि के माध्यतम से एकत्रित किये जाते है इनका स्पष्ट निरूपण होना चाहिए।
- ✓ सारिणीकरण,तथ्य विश्लेषण व्याख्या एवं प्रतिवेदन Tabulation, interpretation and Report Writing - परियोजना कार्य प्रस्ताव में स्पष्ट रूप से वर्णन करना चाहिए कि शोध अध्ययन में किस प्रकार की सारिणी का प्रयोग करेगें तथ्यों का कैसे विश्लेषण करेगें उनकी व्याख्या कैसे करेगें तथा उनका प्रतिवेदन करेगें।
- ✓ अध्ययन की सीमाएं : आपके द्वारा किया जा रहे शोध के अध्ययन की सीमाओं का वर्णन किया जाना है |
- ✓ सुझाव एवं संस्तुति : शोध प्रबंध पूर्ण होने पर सुझाव एवं संस्तुति प्रदान की जानी होती है |
- ✓ शोध अध्ययन का अध्यायीकरण Chapterisation of research Study - इस शीर्षक के अन्तर्गत परियोजना कार्य में कौन-कौन से अध्याय होगें तथा उन अध्यायों में कौन-कौन से तथ्य होगें का वर्णन करना चाहिए।

यहॉं पर आपको प्राथमिक तथ्य एकत्रितकरण में साक्षात्कार लेने हेतु कुछ सलाह दी जाती है।

1 एक बार में केवल एक ही प्रश्न पूछें।
2 यदि आवश्यकता है तो प्रश्न को दोहरायें।
3 सरल भाषा का प्रयोग करें ताकि आपके द्धारा पूछे गये प्रश्न को उत्तरदाता ठीक प्रकार से समझ सके।
4 उत्तरदाता के उत्तर को ध्यानपूर्वक सुनें।
5 उत्तरदाता के चेहरे के हाव-भाव ,भावभंगिमा,शरीर एंव मन की दशा को भी समझने का प्रयास करें ताकि आप उत्तरदाता की मनोस्थिति से परिचित हो सकें।
6 उत्तरदाता को उत्तर देने हेतु पर्याप्त समय दें,परन्तु अत्यधिक नहीं ताकि वह प्रश्नों के उत्तर को बना कर दें तथा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल न हो सकें।
7 उत्तरदाता को उत्तर देने की स्थिति में शोधकर्ता द्धारा किसी प्रकार की भावभंगिमा न प्रकट करें।
8 विवादित मुद्दों पर भावभंगिमा बिल्कुल निष्पक्ष प्रतीत होनी चाहिये।
9 ऐसे प्रश्नों की सूची बना लें जिनके उत्तर अस्पष्ट,अनेकार्थी एंव टालने वाले हो।
10 अव्यवस्थित प्रश्नों के उत्तर हेतु अतिरिक्त प्रश्नों को शामिल किया जाना चाहिए।

उपरोक्त सभी विधियों की व्याख्या एवं परिभाषा देते हुए शोध अध्ययन में कैसे प्रयोग करेगें का स्पष्ट वर्णन करना चाहिए।
इस प्रकार उपरोक्त शीर्षकों के अन्तर्गत परियोजना कार्य प्रस्ताव तैयार कर पर्यवेक्षक को प्रस्तुत करना चाहिए तथा पर्यवेक्षक के अनुमोदन के पश्चात अपना शोध कार्य शुरू करना चाहिए।

शिक्षार्थियों की सहायता हेतु यहाँ शोध से सम्बन्धित विभिन्न चरणों की व्याख्या की जा रही है।

प्रथम चरण-

शोध प्रक्रिया में सबसे पहला चरण समस्या का चुनाव या शोध विषय का निर्धारण होता है। यदि आपको किसी विषय पर शोध करना है तो स्वाभाविक है कि सर्वप्रथम आप यह तय करेंगे कि किस विषय पर कार्य किया जाये। विषय का निर्धारण करना तथा उसके सैद्धान्तिक एवं अवधारणात्मक पक्ष को स्पष्ट करना शोध का प्रथम चरण होता है। शोध विषय का चयन सरल कार्य नही होता है,इसलिए ऐसे विषय को चुना जाना चाहिए जो आपके समय और साधन की सीमा के अन्तर्गत हो तथा विषय न केवल आपकी रुचि का हो अपितु समसामयिक हो। इस तरह आपके द्वारा चयनित एक सामान्य विषय वैज्ञानिक खोज के लिए आपके द्वारा विशिष्ट शोध समस्या के रूप में निर्मित कर दिया जाता है। शोध विषय के निर्धारण और उसके प्रतिपादन की दो अवस्थाएँ होती हैं- प्रथमतः तो शोध समस्या को गहन एवं व्यापक रूप से समझना तथा द्वितीय उसे विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से प्रकारान्तर में अर्थपूर्ण शब्दों में प्रस्तुत करना।

अक्सर शोध छात्रों द्वारा यह प्रश्न किया जाता है कि किस विषय पर शोध करें। इसी तरह अक्सर शोध छात्रों से यह प्रश्न किया जाता है कि आपने चयनित विषय क्यों लिया। दोनों ही स्थितियों से यह स्पष्ट है कि शोध के विषय या अध्ययन समस्या का चुनाव महत्वपूर्ण चरण है, जिसका स्पष्टीकरण जरूरी है,लेकिन अक्सर ऐसा होता नहीं है। अनेकों शोध छात्र अपने शोध विषय के चयन का स्पष्टीकरण समुचित तरीके से नहीं दे पाते हैं। विद्वानों ने अपने शोध विषय के चयन के तर्कों पर काफी कुछ लिखा है। हम यहाँ उनके तर्कों को प्रस्तुत नहीं करेंगे अपितु मात्र बनार्ड (1994) के उस सुझाव का उल्लेख करना चाहेगें जिसमें उसने शोधकर्ताओं को यह सुझाव दिया है कि वे स्वयं से निम्नांकित प्रश्न पूछें-

- ☐ क्या आपको अपने शोध का विषय रूचिकर लगता है।
- ☐ क्या आपके शोध विषय का वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव है।
- ☐ क्या आपके पास शोध कार्य को सम्पादित करने के लिए पर्याप्त संसाधन है।
- ☐ क्या शोध प्रश्नों को पूछने अथवा शोध की कुछ विधियों एवं तकनीकों के प्रयोग से आपके समक्ष किसी प्रकार की नीतिगत अथवा नैतिक समस्या तो नहीं आयेगी।
- ☐ क्या आपके शोध का विषय सैद्धान्तिक रूप से महत्वपूर्ण और रोचक है।

निश्चित रूप से उपरोक्त प्रश्नों पर तार्किक तरीके से विचार करने पर उत्तम शोध समस्या का चयन सम्भव हो सकेगा।

द्वितीय चरण-

यह तय हो जाने के पश्चात् कि किस विषय पर शोध कार्य किया जाएगा, विषय से सम्बन्धित साहित्यों (अन्य शोध कार्यो) का सर्वेक्षण (अध्ययन) किया जाता है। इससे तात्पर्य यह है कि चयनित विषय से सम्बन्धित समस्त लिखित या अलिखित, प्रकाशित या अप्रकाशित सामग्री का गहन अध्ययन किया जाता है, ताकि चयनित विषय के सभी पक्षों की जानकारी प्राप्त हो सके। चयनित विषय से सम्बन्धित सैद्धान्तिक एवं अवधारणात्मक साहित्य तथा आनुभविक साहित्य का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। इस पर ही शोध की समस्या का वैज्ञानिक एवं तार्किक प्रस्तुतीकरण निर्भर करता है। कभी-कभी यह प्रश्न उठता है कि सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण शोध की समस्या के चयन के पूर्व होना चाहिए कि पश्चात्। ऐसा कहा जाता है कि शोध समस्या को विद्यमान साहित्य के प्रारम्भिक अध्ययन से पूर्व ही चुन लेना बेहतर रहता है।' (इग्नु 2006: 33) यहाँ यह भी प्रश्न उठ सकता है कि बिना विषय के बारे में कुछ पढ़े कोई कैसे अध्ययन समस्या का निर्धारण कर सकता है विशेषकर तब जब आप यह अपेक्षा रखते हैं कि शोधकर्ता शोध के प्रथम चरण में ही अध्ययन की समस्या को निर्धारित निर्मित, एवं परिभाषित करे तथा उसके शोध प्रश्नों एवं उद्देश्यों को अभिव्यक्त करे। समस्या का चयन एवं उसका निर्धारण शोधकर्ता के व्यापक ज्ञान के आधार पर हो सकता है। तत्पश्चात् उसे उक्त विषय से सम्बन्धित सैद्धान्तिक एवं अवधारणात्मक तथा विविध विद्वानों द्वारा किये गये आनुभविक अध्ययनों से सम्बन्धित सामग्री का अध्ययन करना चाहिए। ऐसा करने से उसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सम्बन्धित विषय पर किन-किन दृष्टियों से, किन-किन विद्वानों ने विचार किया है और विविध अध्ययनों के उद्देश्य, उपकल्पनाएं, कार्यविधि क्या-क्या रही है।साथ ही साथ विविध विद्वानों के क्या निष्कर्ष रहे हैं। इतना ही नहीं उन विद्वानों द्वारा झेली गयी समस्याओं या उसके द्वारा भविष्य के अध्ययन किये जाने वाले सुझाये विषयों की भी जानकारी प्राप्त हो जाती है। ये समस्त ज्ञान एवं जानकारियाँ किसी भी शोधकर्ता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होती हैं।

तृतीय चरण-

सम्बन्धित समस्त सामग्रियों के अध्ययनों के उपरान्त शोधकर्त्ता अपने शोध के उद्देश्यों को स्पष्ट अभिव्यक्त करता है कि उसके शोध के वास्तविक उद्देश्य क्या-क्या हैं। शोध के स्पष्ट उद्देश्यों का होना किसी भी शोध की सफलता एवं गुणवत्तापूर्ण प्रस्तुतीकरण के लिए आवश्यक है। उद्देश्यों की स्पष्टता अनिवार्य है। उद्देश्यों के आधार पर ही आगे कि प्रक्रिया निर्भर करती है, जैसे कि तथ्य संकलन की प्रविधि का चयन और उस प्रविधि द्वारा उद्देश्यों के ही अनुरूप तथ्यों के संकलन की रणनीति या प्रश्नों का निर्धारण। यह कहना उचित ही है कि जब तक आपके पास शोध के उद्देश्यों का स्पष्ट अनुमान न होगा, शोध नही होगा और एकत्रित सामग्री में वांछित सुसंगति नही आएगी क्योंकि यह सम्भव है कि आपने विषय को देखा हो जिस स्थिति में हर परिप्रेक्ष्य भिन्न मुद्दों से जुड़ा होता है। उदाहरण के लिए, विकास पर विकास अध्ययन अध्ययन में अनेक शोध प्रश्न हो सकते हैं, जैसे विकास में महिलाओं की भूमिका, विकास में जाति एवं नातेदारी की भूमिका अथवा पारिवारिक एवं सामुदायिक जीवन पर विकास के समाजिक परिणामा।'(इग्नु 2006: 33-34) है।

चतुर्थ चरण-

शोध के उद्देश्यों के निर्धारण के पश्चात् अध्ययन की उपकल्पनाओं या प्राक्कल्पनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की जरुरत है। यह उल्लेखनीय है कि सभी प्रकार के शोध कार्यों में उपकल्पनाएँ निर्मित नहीं की जाती हैं,विशेषकर ऐसे शोध कार्यों में जिसमें विषय से सम्बन्धित पूर्व जानकारियाँ सप्रमाण उपलब्ध नहीं होती हैं। अतः यदि हमारा शोध कार्य अन्वेषणात्मक है तो हमें वहाँ उपकल्पनाओं के स्थान पर शोध प्रश्नों को रखना चाहिए। इस दृष्टि से यदि देखा जाये तो स्पष्ट होता है कि उपकल्पनाओं का निर्माण हमेशा ही शोध प्रक्रिया का एक चरण नहीं होता है उसके स्थान पर शोध प्रश्नों का निर्माण उस चरण के अन्तर्गत आता है। उपकल्पना या प्राक्कल्पना से तात्पर्य क्या हैं,और इसकी शोध में क्या आवश्यकता है, इत्यादि प्रश्नों का उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

लुण्डबर्ग (1951:9) के अनुसार,उपकल्पना एक सम्भावित सामान्यीकरण होता है, जिसकी वैद्यता की जाँच की जानी होती है। अपने प्रारम्भिक स्तरों पर उपकल्पना कोई भी अटकलपच्चू, अनुमान,काल्पनिक विचार या सहज ज्ञान या और कुछ हो सकता है जो क्रिया या अन्वेषण का आधार बनता है।''

गुड तथा स्केट्स (1954: 90) के अनुसार% एक उपकल्पना बुद्धिमत्तापूर्ण कल्पना या निष्कर्ष होती है जो अवलोकित तथ्यों या दशाओं को विश्लेषित करने के लिए निर्मित और अस्थायी रूप से अपनायी जाती है।

गुडे तथा हॉट (1952:56) के शब्दों में कहा जाये तो,यह (उपकल्पना) एक मान्यता है जिसकी वैद्यता निर्धारित करने के लिए उसकी जाँच की जा सकती है।'

सरल एवं स्पष्ट शब्दों में कहा जाये तो, उपकल्पना शोध विषय के अन्तर्गत आने वाले विविध उद्देश्यों से सम्बन्धित एक काम चलाऊ अनुमान या निष्कर्ष है,जिसकी सत्यता की परीक्षा प्राप्त तथ्यों के आधार पर की जाती है। विषय से सम्बन्धित साहित्यों के अध्ययन के पश्चात् जब उत्तरदाता अपने अध्ययन विषय को पूर्णतः जान जाता है तो उसके मन में कुछ सम्भावित निष्कर्ष आने लगते हैं और वह अनुमान लगाता है कि अध्ययन में विविध मुद्दों के सन्दर्भ में प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के उपरान्त इस-इस प्रकार के निष्कर्ष आएंगे। ये सम्भावित निष्कर्ष ही उपकल्पनाएँ होती हैं। वास्तविक तथ्यों के विश्लेषण के उपरान्त कभी-कभी ये गलत साबित होती हैं और कभी-कभी सही। उपकल्पनाओं का सत्य प्रमाणिक होना या असत्य सिद्ध हो जाना विशेष महत्व का नहीं होता है। इसलिए शोधकर्त्ता को अपनी उपकल्पनाओं के प्रति लगाव या मिथ्या झुकाव नहीं होना चाहिए अर्थात् उसे कभी भी ऐसा प्रयास नहीं करना चाहिए जिससे कि उसकी उपकल्पना सत्य प्रमाणित हो जाये। जो कुछ भी प्राथमिक तथ्यों से निष्कर्ष प्राप्त हों उसे ही हर हालात में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। वैज्ञानिकता के लिए वस्तुनिष्ठता प्रथम शर्त है इसे ध्यान में रखते हुए ही शोधकर्ता को शोध कार्य सम्पादित करना चाहिए। उपकल्पना शोधकर्ता को विषय से भटकने से बचाती है। इस तरह एक उपकल्पना का इस्तेमाल दृष्टिहीन खोज से रक्षा करता है (यंग 1960: 99)।

उपकल्पना या प्राक्कल्पना स्पष्ट एवं सटीक होनी चाहिए। वह ऐसी होनी चाहिए जिसका प्राप्त तथ्यों से निर्धारित अवधि में अनुभवजन्य परीक्षण सम्भव हो। यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि एक उपकल्पना और एक सामान्य कथन में अन्तर होता है। इस रूप में यदि देखा जाय तो कहा जा सकता है कि उपकल्पना में दो परिवर्त्यों में से किसी एक के निष्कर्षों को सम्भावित तथ्य में रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उपकल्पना परिवर्त्यों के बीच सम्बन्धों के स्वरूप को अभिव्यक्त करती है। सकारात्मक, नकारात्मक और शून्य, ये तीन सम्बन्ध परिवर्त्यों के मध्य माने जाते हैं। उपकल्पना परिवर्त्यों के सम्बन्धों को उद्घाटित करती है।

उपकल्पना जो कि फलदायी अन्वेषण का अस्थायी केन्द्रीय विचार होती है (यंग 1960: 96), के निर्माण के चार स्रोतों का गुडे तथा हाट (1952: 63-67) ने उल्लेख किया है-

(अ) सामान्य संस्कृति (ब) वैज्ञानिक सिद्धान्त (स) सादृश्य (n) व्यक्तिगत अनुभव। इन्हीं चार स्रोतों से उपकल्पनाओं का उद्गम होता है।

उपकल्पनाओं के बिना शोध अनिर्दिष्ट (Unfocused) एक दैव आनुभविक भटकाव होता है। उपकल्पना शोध में जितनी सहायक है उतनी ही हानिकारक भी हो सकती है। इसलिए अपनी उपकल्पना पर जरुरत से ज्यादा विश्वास रखना या उसके प्रति पूर्वाग्रह रखना ,उसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाना कदापि उचित नही है। ऐसा यदि शोधकर्ता करता है तो उसके शोध में वैषयिकता समा जायेगी और वैज्ञानिकता का अन्त हो जाएगा।

पंचम चरण-

समग्र एवं निदर्शन निर्धारण शोध कार्य का पाँचवा चरण होता है। समग्र का तात्पर्य उन सबसे है, जिन पर शोध आधारित है या जिन पर शोध किया जा रहा है। उदाहरण के लिए यदि हम किसी विश्वविद्यालय के छात्रों से सम्बन्धित किसी पक्ष पर शोध कार्य करने जा रहे हैं, तो उस विश्वविद्यालय के समस्त छात्र अध्ययन का समग्र होंगे। इसी तरह यदि हम सामाजिक-आर्थिक विकासों का ग्रामीण महिलाओं पर प्रभाव का अध्ययन कर रहे हैं, तो चयनित ग्राम या ग्रामों की समस्त महिलाएँ अध्ययन समग्र होंगी। चूँकि किसी भी शोध कार्य में समय और साधनों की सीमा होती है और बहुत बड़े और लम्बी अवधि के शोध कार्य में सामाजिक तथ्यों के कभी-कभी नष्ट होने का भय भी रहता है, इसलिए सामान्यतः छोटे स्तर (माइक्रो) के शोध कार्य को वरीयता दी जाती है। इस तथाकथित छोटे या लघु अध्ययन में भी सभी इकाईयों का अध्ययन सम्भव नही हो पाता है, इसलिए कुछ प्रतिनिधित्वपूर्ण इकाईयों का चयन वैज्ञानिक आधार पर कर लिया जाता है। इसी चुनी हुई इकाईयों को निदर्शन कहते हैं। सम्पूर्ण अध्ययन इन्हीं निदर्शित इकाईयों से प्राप्त तथ्यों पर आधारित होता है, जो सम्पूर्ण समग्र पर लागू होता है। यंग (1960: 302) के शब्दों में कहा जाये तो कह सकते हैं कि एक सांख्यकीय निदर्शन उस सम्पूर्ण समूह अथवा योग का एक अतिलघु चित्र या क्रास सेक्शन' है,जिससे निदर्शन लिया गया है।

समग्र का निर्धारण ही यह तय कर देता है कि आनुभविक अध्ययन किन पर होगा। इसी स्तर पर न केवल अध्ययन इकाईयों का निर्धारण होता है, अपितु भौगोलिक क्षेत्र का भी निर्धारण होता है। और भी सरलतम रूप में कहा जाये तो इस स्तर में यह तय हो जाता है कि अध्ययन कहां (क्षेत्र) और किन पर(समग्र) होगा, साथ ही कितनों (निदर्शन) पर होगा। उल्लेखनीय है कि अक्सर निदर्शन की आवश्यकता पड़ ही जाती है। ऐसी स्थिति में नमूने के तौर पर कुछ इकाईयों का चयन कर उनका अध्ययन कर लिया जाता है। ऐसे नमूने' हम दैनिक जीवन में भी प्रायः प्रयोग में लाते हैं। उदाहरण के लिए चावल खरीदने के लिए पूरे बोरे के चावलों को उलट-पलट कर नहीं देखा जाता है, अपितु कुछ ही चावल के दानों के आधार पर सम्पूर्ण बोरे के चावलों की गुणवत्ता को परख लिया जाता है। इसी तरह भगोने या कुकर में चावल पका है कि नहीं को ज्ञात करने के लिए कुकर के कुछ ही चावलों को उंगलियों मसलकर चावल के पकने या न पकने का निष्कर्ष निकाल लिया जाता है। इस तरह यह स्पष्ट है कि ये जो कुछ ही चावल सम्पूर्ण चावल का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, यानि जिनके आधार पर हम उसकी गुणवत्ता या पकने का निष्कर्ष निकाल रहे हैं निदर्शन (सैम्पल) ही है। गुडे और हाट (1952 : 209) का कहना है कि, ''एक निदर्शन,जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, किसी विशाल सम्पूर्ण का लघु प्रतिनिधि है।''

निदर्शन की मोटे तौर पर दो पद्धतियाँ मानी जाती हैं- एक को सम्भावनात्मक निदर्शन कहते हैं, और दूसरी को असम्भावनात्मक या सम्भावना-रहित निदर्शन। इन दोनों पद्धतियों के अन्तर्गत निदर्शन के अनेकों प्रकार प्रचलन में हैं। निदर्शन की जिस किसी भी पद्धति अथवा प्रकार का चयन किया जाये, उसमें विशेष सावधानी अपेक्षित होती है, ताकि उचित निदर्शन प्राप्त हो सके।

कभी-कभी निदर्शन की जरुरत नहीं पड़ती है। इसका मुख्य कारण समग्र का छोटा होना हो सकता है, या अन्य कारण भी हो सकते हैं जैसे सम्बन्धित समग्र या इकाई का आँकड़ा अनुपलब्ध हो, उसके बारे में कुछ पता न हो इत्यादि। ऐसी परिस्थिति में सम्पूर्ण समग्र का अध्ययन किया जाता है। ऐसा ही जनगणना कार्य में भी किया जाता है, इसीलिए इस विधि को 'जनगणना' या 'संगणना' विधि कहा जाता है, और इसमें समस्त इकाईयों का अध्ययन किया जाता है। इस तरह यह स्पष्ट है कि, सामाजिक शोध में हमेशा निदर्शन लिया ही जाएगा यह जरूरी नहीं होता है, कभी-कभी बिना निदर्शन प्राप्त किये ही 'संगणना विधि' द्वारा भी अध्ययन इकाईयों से प्राथमिक तथ्य संकलित कर लिये जाते हैं।

छठवाँ चरण-

प्राथमिक तथ्य संकलन का वास्तविक कार्य तब प्रारम्भ होता है, जब हम तथ्य संकलन की तकनीक/उपकरण, विधि इत्यादि निर्धारित कर लेते हैं। उपयुक्त और यथेष्ट तथ्य संकलन तभी संभव है जब हम अपने शोध की आवश्यकता, उत्तरदाताओं की विशेषता तथा उपयुक्त तकनीक एवं प्रविधियों, उपकरणों/मापकों इत्यादि का चयन करें। प्राथमिक तथ्य संकलन उत्तरदाताओं से सर्वेक्षण के आधार पर और प्रयोगात्मक पद्धति से हो सकता है।

प्राथमिक तथ्य संकलन की अनेकों तकनीकें/उपकरण प्रचलन में हैं, जिनके प्रयोग द्वारा उत्तरदाताओं से सूचनाएँ एवं तथ्य प्राप्त किये जाते हैं। ये उपकरण या तकनीकें मौखिक अथवा लिखित हो सकती हैं, और इनके प्रयोग किये जाने के तरीकें अलग-अलग होते हैं। शोध की गुणवत्ता इन्हीं तकनीकों तथा इन तकनीकों के उचित तरीकें से प्रयोग किये जाने पर निर्भर करती है। उपकरणों या तकनीकों की अपनी-अपनी विशेषताएँ एवं सीमाएँ होती हैं। शोधकर्त्ता शोध विषय की प्रकृति, उद्देश्यों, संसाधनों की उपलब्धता (धन और समय) तथा अन्य विचारणीय पक्षों पर व्यापक रूप से सोच-समझकर इनमें से किसी एक तकनीक (तथ्य एकत्र करने का तरीका) का सामान्यतः प्रयोग करता है। कुछ प्रमुख उपकरण या तकनीकें इस प्रकार हैं- प्रश्नावली, साक्षात्कार, साक्षात्कार अनुसूची, साक्षात्कार-मार्गदर्शिका (इन्टरव्यू गाईड) इत्यादि। विधि से तात्पर्य सामग्री विश्लेषण के साधनों से है। प्रायः तकनीक/उपकरण और विधियों को परिभाषित करने में भ्रामक स्थिति बनी रहती है। स्पष्टता के लिए यहाँ उल्लेखनीय है कि विधि उपकरणों या तकनीकों से अलग किन्तु अन्तर्सम्बद्ध वह तरीका है जिसके द्वारा हम एकत्रित सामग्री की व्याख्या करने के लिए सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्यों का प्रयोग करते हैं। शोध कार्य में प्रक्रियात्मक नियमों के साथ विभिन्न तकनीकों के सम्मिलन से शोध की विधि बनती है। इसके अन्तर्गत अवलोकन, केस-स्टडी, जीवन-वृत्त इत्यादि शोध की विधियाँ उल्लेखनीय हैं।

सप्तम चरण-

प्राथमिक तथ्य संकलन शोध का अगला चरण होता है। शोध के लिए प्राथमिक तथ्य संकलन हेतु जब उपकरणों एवं प्रविधियों का निर्धारण हो जाता है, और उन उपकरणों एवं तकनीकों का अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप निर्माण हो जाता है, तो उसके पश्चात् क्षेत्र में जाकर वास्तविक तथ्य संकलन का अति महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ होता है। कभी-कभी उपकरणों या तकनीकों की उपयुक्तता जाँचने के लिए और उसके द्वारा तथ्य संकलन का कार्य प्रारम्भ करने के पहले पूर्व-अध्ययन (पायलट स्टडी) द्वारा उनका पूर्व परीक्षण किया जाता है।

यदि कोई प्रश्न अनुपयुक्त पाया जाता है या कोई प्रश्न संलग्न करना होता है या और कुछ संशोधन की आवश्यकता पड़ती है तो उपकरण में आवश्यक संशोधन कर मुख्य तथ्य संकलन का कार्य प्रारम्भ कर दिया जाता है। सामान्यतः विकास अध्ययन शोध में प्राथमिक तथ्य संकलन को अति सरल एवं सामान्य कार्य मानने की भूल की जाती है। वास्तविकता यह है कि यह एक अत्यन्त दुरुह एवं महत्वपूर्ण कार्य होता है, तथा शोधकर्ता की पर्याप्त कुशलता ही वांछित तथ्यों को प्राप्त करने में सफल हो सकती है। शोधकर्ता को यह प्रयास करना चाहिए कि उसका कार्य व्यवस्थित तरीके से निश्चित समयावधि में पूर्ण हो जाये। उल्लेखनीय है कि कभी-कभी उत्तरदाताओं से सम्पर्क करने की विकट समस्या उत्पन्न होती है और अक्सर उत्तरदाता सहयोग करने को तैयार भी नहीं होते हैं। ऐसी परिस्थिति में पर्याप्त सुझ-बुझ तथा परिपक्वता की आवश्यकता पड़ती है। उत्तरदाताओं को विषय की गंभीरता को तथा उनके सहयोग के महत्व को समझाने की जरुरत पड़ती है। उत्तरदाताओं से झूठे वादे नहीं करने चाहिए और न उन्हें किसी प्रकार का प्रलोभन देना चाहिए। उत्तरदाताओं की सहूलियत के अनुसार ही उनसे सम्पर्क करने की नीति को अपनाना उचित होता है। यथासम्भव घनिष्ठता बढ़ाने के लिए (संदेह दूर करने एवं सहयोग प्राप्त करने के लिए) प्रयास करना चाहिए। तथ्य संकलन अनौपचारिक माहौल में बेहतर होता है। कोशिश यह करनी चाहिए कि उस स्थान विशेष के किसी ऐसे प्रभावशाली, लोकप्रिय, समाजसेवी व्यक्ति का सहयोग प्राप्त हो जाये जिसकी सहायता से उत्तरदाताओं से न केवल सम्पर्क आसानी से हो जाता है। अपितु उनसे वांछित सूचनाएँ भी सही-सही प्राप्त हो जाती है।

यदि तथ्य संकलन का कार्य अवलोकन द्वारा या साक्षात्कार-अनुसूची, साक्षात्कार इत्यादि द्वारा हो रहा हो, तब तो क्षेत्र विशेष में जाने तथा उत्तरदाताओं से आमने-सामने की स्थिति में प्राथमिक सूचनाओं को प्राप्त करने की जरुरत पड़ती है। अन्यथा यदि प्रश्नावली का प्रयोग होना है, तो शोधकर्ता को सामान्यतः क्षेत्र में जाने की जरूरत नहीं पड़ती है। प्रश्नावली को डाक द्वारा और आजकल तो ई-मेल के द्वारा इस अनुरोध के साथ उत्तरदाताओं को प्रेषित कर दिया जाता है कि वे यथाशीघ्र (या निर्धारित समयाविधि में) पूर्ण रूप से भरकर उसे वापस शोधकर्ता को भेज दें।

यदि शोध कार्य में कई क्षेत्र-अन्वेषक कार्यरत हों, तो वैसी स्थिति में उनको समुचित प्रशिक्षण तथा तथ्य संकलन के दौरान उनकी पर्याप्त निगरानी की आवश्यकता पड़ती है। प्रायः अन्वेषक प्राथमिक तथ्यों की महत्ता को समझ नहीं पाते हैं, इसलिए वे वास्तविक तथ्यों को प्राप्त करने में विशेष प्रयास और रुचि नहीं लेते हैं। अक्सर तो वे मनगढ़न्त अनुसूची को भर भी देते हैं। इससे

सम्पूर्ण शोधकार्य की गुणवत्ता प्रभावित न हो जाये, इसके लिए विशेष सावधानी तथा रणनीति आवश्यक है ताकि सभी अन्वेषक पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ प्राथमिक तथ्यों का संकलन करें। तथ्य संकलन के दौरान आवश्यक उपकरणों जैसे टेपरिकार्डर, वायस रिकार्डर, कैमरा, विडियों कैमरा इत्यादि का भी प्रयोग किया जा सकता है। इनके प्रयोग के पूर्व उत्तरदाता की सहमति जरूरी है।प्राथमिक तथ्यों को संकलित करने के साथ ही साथ एकत्रित सूचनाओं की जाँच एवं आवश्यक सम्पादन भी करते जाना चाहिए। भूलवश छूटे हुए प्रश्नों, अपूर्ण उत्तरों इत्यादि को यथासमय ठीक करवा लेना चाहिए। कोई नयी महत्वपूर्ण सूचना मिले तो उसे अवश्य नोट कर लेना चाहिए।

तथ्यों का दूसरा स्रोत है द्वितीयक स्रोत द्वितीयक स्रोत तथ्य संकलन के वे स्रोत होते है, जिनका विश्लेषण एवं निर्वचन दूसरे के द्वारा हो चुका होता है। अध्ययन की समस्या के निर्धारण के समय से ही द्वितीयक स्रोतों से प्रात तथ्यों का प्रयोग प्रारम्भ हो जाता है और रिपोर्ट लेखन के समय तक स्थान-स्थान पर इनका प्रयोग होता रहता है।

अष्ठम चरण:

आठवाँ चरण वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण अथवा रिपोर्ट लेखन का होता है। विविध उपकरणों या तकनीकों एवं प्रविधियों के माध्यम से एकत्रित समस्त गुणात्मक सामग्री को गणनात्मक रूप देने के लिए विविध वर्गों में रखा जाता है, आवश्यकतानुसार सम्पादित किया जाता है, तत्पश्चात् सारिणी में गणनात्मक स्वरूप (प्रतिशत सहित) देकर विश्लेषित किया जाता है। कुछ वर्षो पूर्व तक सम्पूर्ण एकत्रित सामग्री को अपने हाथों से बड़ी-बड़ी कागज की शीटों पर कोडिंग करके उतारा जाता था तथा स्वयं शोधकर्ता एक-एक केस/अनुसूची से सम्बन्धित तथ्य की गणना करते हुए सारणी बनाता था। आज कम्प्यूटर का शोध कार्यो में व्यापक रूप से प्रचलन हो गया है। समाजवैज्ञानिक शोधों में कम्प्यूटर के विशेष सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं, जिनकी सहायता से सभी प्रकार की सारणियाँ (सरल एवं जटिल) शीघ्रातिशीघ्र बनायी जाती हैं। एस0 पी0 एस0 एस. (स्टैटिस्टिकल पैकेज फार सोशल साइंसेज) एक ऐसा ही प्रोग्राम है, जिसका प्रचलन तेजी से बढ़ा है। समाज वैज्ञानिक शोधों में एस.पी.एस.एस. द्वारा सारिणीयाँ बनायी जा रही हैं। विविध परिवर्त्यों में सह-सम्बन्ध तथा सांख्यकीय परीक्षण इसके द्वारा अत्यन्त सरल हो गया है। सारिणीयों के निर्मित हो जाने के पश्चात् उनका तार्किक विश्लेषण किया जाता है। तथ्यों में कार्य-कारण सम्बन्ध तथा सह-सम्बन्ध देखे जाते हैं। इसी चरण में उपकल्पनाओं की सत्यता की परीक्षा भी की जाती है। सैद्धान्तिक एवं अवधारणात्मक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए समस्त शोध सामग्री को व्यवस्थित एवं तार्किक तरीके से विविध अध्यायों में रखकर विश्लेषित करते हुए शोध रिपोर्ट तैयार की जाती है।

अध्ययन के अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची तथा प्राथमिक तथ्य संकलन की प्रयुक्त की गयी तकनीक (अनुसूची या प्रश्नावली या स्केल इत्यादि) को संलग्न किया जाता है। सम्पूर्ण रिपोर्ट/प्रतिवेदन में स्थान-स्थान पर विषय भी आवश्यकता के अनुसार फोटोग्राफ, डाईग्राम, ग्राफ, नक्शे, स्केल इत्यादि रखे जाते हैं।

उपरोक्त रिपोर्ट लेखन के सन्दर्भ में ही उल्लेखनीय है कि, शोध रिपोर्ट या प्रतिवेदन का जो कुछ भी उद्देश्य हो, उसे यथासम्भव स्पष्ट होना चाहिए (मेटा स्पेन्सर, 1979: 47) । सेल्टिज तथा अन्य (1959 : 443) का कहना है कि, रिपोर्ट में शोधकर्ता को निम्नांकित बातें स्पष्ट करनी चाहिए-

1 समस्या की व्याख्या करें जिसे अध्ययनकर्ता सुलझाने की कोशिश कर रहा है।

2 शोध प्रक्रिया की विवेचना करें, जैसे निदर्शन कैसे लिया गया और तथ्यों के कौन से स्रोत प्रयोग किए गये हैं।

3 परिणामों की व्याख्या करें।

4 निष्कर्षो को सुझायें जो कि परिणामों पर आधारित हों। साथ ही ऐसे किसी भी प्रश्न का उल्लेख करें जो अनुत्तरीत रह गया हो और जो उसी क्षेत्र में और अधिक शोध की मांग कर रहा हो।

गेराल्ड आरण् लेस्ली तथा अन्य (1994:35) का कहना है कि, 'विकास अध्ययन शोधों में विश्लेषण और व्याख्या अक्सर सांख्यिकीय नही होती। इसमें साहित्य और तार्किकता की आवश्यकता होती है। यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान अतिक्लिष्ट सांख्यिकीय पद्धति का भी प्रयोग करने लगे हैं। प्रत्येक विकास अध्ययन समस्या के सर्वाधिक उपयुक्त तरीकों जो सर्वाधिक ज्ञान एवं समझ पैदा करने वाला होता है, के अनुरूप शोध और तथ्य संकलन तथा विश्लेषण को अपनाता है। उपागमों का प्रकार केवल अन्य विकास अध्ययन विशेषज्ञों के शोध को स्वीकार करने तथा यह विश्वास करने के लिए कि यह क्षेत्र में योगदान देगा कि इच्छा के कारण सीमित होता हैं।''

अन्त में यह कहा जा सकता है कि, यद्यपि सभी शोधकर्त्ता विकास अध्ययन पद्धति के इन्हीं चरणों से गुजरते हैं तथापि कई चरणों को दूसरी तरीके से प्रयोग करते हैं। गेराल्ड आरण् लेस्ली (1994: 38) तथा अन्य का कहना है कि, 'यह विविधता विकास अध्ययन शोध को मजबूती प्रदान करती है और अपने द्वारा अध्ययन की जाने वाली समस्याओं के विस्तार को बढ़ाती है'।

सामाजिक शोध का अध्ययन क्षेत्र एवं सार्थकता:

विकास अध्ययन शोध का अध्ययन क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। स्वाभाविक है कि सामाजिक शोध का क्षेत्र भी अत्यन्त व्यापक होता है। सामाजिक शोध के विस्तृत क्षेत्र को कार्ल पियर्सन (1937: 16) के इस कथन से आसानी से समझा जा सकता है कि,'सामाजिक शोध का क्षेत्र वस्तुतः असीमित है, और शोध की सामग्री अन्तहीन। सामाजिक घटनाओं का प्रत्येक समूह सामाजिक जीवन का प्रत्येक पहलू,पूर्व और वर्तमान विकास का प्रत्येक चरण सामाजिक वैज्ञानिक के लिए सामग्री है।'' पीण्वीण् यंग (1977: 34-98) ने सामाजिक शोध के क्षेत्र की व्यापक विवेचना करते हुए विविध विद्वानों के अध्ययनों यथा कूले, मीड थामस, नैनकी, पार्क, बर्गेस, लिण्डस्, सीण् राईट मिल्स, एंगेल, कोमोरोस्की,मर्डाल, स्टॉफर, मर्डोक, मर्टन, गौर्डन, आलपोर्ट, ब्लूमर, बेल्स, मैज का विवरण प्रस्तुत किया है।

एक विकास अध्ययन शोधकर्ता सामाजिक जीवन की किसी विशिष्ट अथवा सामान्य घटना को शोध हेतु चयन कर सकता है। सामाजिक शोध के अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत मानव समाज व मानव जीवन के सभी पक्ष आते हैं। विकास अध्ययन की विविध विशेषीकृत शाखाओं यथा- ग्रामीण विकास अध्ययन , नगरीय विकास अध्ययन , औद्योगिक विकास अध्ययन , वृद्धावस्था विकास अध्ययन ,युवाओं का विकास अध्ययन ,चिकित्सकीय विकास अध्ययन , विचलन का विकास अध्ययन , सामाजिक आन्दोलन, सामाजिक वहिष्करण, सामाजिक परिवर्तन, विकास का समाजकार्य, जेण्डर स्टडीज, कानून का विकास अध्ययन , दलित अध्ययन, शिक्षा का विकास अध्ययन , परिवार एवं विवाह का विकास अध्ययन इत्यादि-इत्यादि से सामाजिक शोध का व्यापक क्षेत्र स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है। सामाजिक शोध के उपरोक्त विस्तृत क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में यह कहना कदापि गलत न होगा कि एक विस्तृत सामाजिक क्षेत्र के सम्बन्ध में वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करके सामाजिक शोध अज्ञानता का विनाश करता है। जब हम वृद्धों की समस्याओं, मजदूरों के शोषण और उनकी शोचनीय कार्यदशाओं, बाल मजदूरी, महिला कामगारों की समस्याओं, भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति, बेकारी इत्यादि पर सामाजिक शोध करते हैं, तो उसके प्राप्त परिणामों से न केवल समाज कल्याण के क्षेत्र में सहायता प्राप्त होती है अपितु सामाजिक नीतियों के निर्माण के लिए भी आधार उपलब्ध होता है। विविध सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित शोध कार्य कानून निर्माण की दिशा में भी योगदान करते हैं। सामाजिक शोध से सैद्धान्तिक एवं अवधारणात्मक समझ विकसित होती है, कार्य-कारण सम्बन्ध ज्ञात होते हैं और अन्ततः विषय की उन्नति होती है। सामाजिक शोध न केवल सामाजिक नियन्त्रण में सहायक होता है, अपितु सामाजिक शोध सामाजिक-आर्थिक प्रगति में भी सहायक होता है। सूचना क्रान्ति के इस युग में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने विकास अध्ययन शोध के क्षेत्र को बढ़ा दिया है। पुराने विचार और सिद्धान्त अप्रासंगिक होते जा रहे हैं। नवीन परिस्थितियों ने जटिल सामाजिक यथार्थ को नये सिद्धान्तों एवं विचारों से समझने के लिए बाध्य कर दिया है। सामाजिक शोध के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक महत्व का ही परिणाम है कि आज नीति निर्माता, कानूनविद्, पत्रकारिता जगत, प्रशासक, समाज सुधारक, स्वैच्छिक संगठन, बौद्धिक वर्ग के लोग इससे विशेष अपेक्षा रखते हैं।

उपरोक्त समस्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सामाजिक जीवन के विविध पक्षों का वैज्ञानिक अध्ययन सामाजिक शोध है, जिसके सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक उद्देश्य होते हैं। शोध की सम्पूर्ण प्रक्रिया विविध चरणों से गुजरती हुई पूर्ण होती है। वस्तुनिष्ठता से युक्त सामाजिक शोध से न केवल विषय की समझ विकसित होती है,अपितु नवीन ज्ञान की प्राप्ति के साथ-साथ यह सामाजिक नियन्त्रण, समाज कल्याण, सामाजिक-आर्थिक प्रगति, नीति-निर्माण इत्यादि ने भी सहायक होता है। आपको इस इकाई से जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उसकी सहायता से आस-पास की किसी एक शोध समस्या का चयन करना है तथा शोध के बताये गये चरणों का अनुसरण करते हुए लघु परियोजना कार्य प्रस्तुत करना होगा।

परियोजना कार्य के कवर पेज का प्रारूप

परियोजना कार्य का शीर्षक

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की
मास्टर ऑफ़ आर्ट्स (विकास अध्ययन)
उपाधि हेतु
प्रस्तुत परियोजना कार्य
(प्रश्न पत्र संख्या MADS-12)

शिक्षार्थी का नाम
नामांकन संख्या

निर्देशक का नाम
निर्देशक का पता

तिथि एवं वर्ष
अध्ययन केंद्र का नाम एवं पता

Performa for Submission of M.A.D.S.-12 Project Proposal for Approval from Academic Councellor at Study Center

Enrollment No:………………………………………
Title of the Project Work: …………………………………
Date of Submission: …………………………………
Name of the Study Center:…………………………..
Name of the Regional Center:………………………

Name of the Guide:…………………………………
Signature………… ……………………………….
Name & Address of the Guide:…………………….
……………………………………………………….
……………………………………………………….
Phone No. & Mail Id: …………………………….

Name & Address of the Student
……
……
Phone No.& Mail Id : ……………………………………….
Approved /not approved (with remarks) ……………………………………….
Date: ……………………………………….
Place: ……………………………………….

Declaration

I hereby declare that the dissertation entitled …… …… …… (Write the title in Block Letters) Submitted by me for partial fulfillment of the MADS-12 to Uttarakhand Open University (UOU) is my own original work and has not been submitted earlier to any other institution for the fulfillment of the requirement for any other programme of study. I also declare that no chapter of this manuscript in whole or in part is lifted and incorporated in this report from any earlier work done by me or others.

Date : ……………………………………

Place : ……………………………………

Signature :……………………………………

Enrolment no………………………………….

Name :…………………………………………

Address:……………………………………….

………………………………………………………

………………………………………………………

14/6/24

14/6/24

Certificate

This is to certified that Mr./Ms. ………………………………………………………………………………………… Student of Masters of Arts (Development Studies) from Uttarakhand Open University (UOU) Haldwani was working under my supervision and guidance for his/her Project Work for the course MADS-12. His/Her Project Work entitled …… …… ……………………………

…… ……………

Which he /she is submitting, is his /her genuine and original work.

Signature:………………………………………………

Name:……………………………………………………

Address:…………………………………………………

Phone no. & mail id………………………………….

(To be Filled by Supervisor)

Date:

Place: